मार्गदर्शक कहलाने वाले सूफी व साधुओं की कसौटी

अगर तमाम उम्र सूफी और साधु लोग दूसरे लोगों को उपदेश करते रहे और राह, मंज़िल और ठहराव की जगहों से नावाकिफ़ रहे तो उनकी मिसाल ऐसी है जैसे बूढी औरतें जिनको तमाम उम्र के कच्चे तज़ुर्बे और किसी-न-किसी तरह चन्द दवाओं के नाम याद हो गए हैं और वो इलाज किया करती हैं, या जो लोग कि थोड़े -बहुत पढ़े लिखे हैं और अमृत-सागर और इलाजुलगुर्बा की किताबें देखकर इलाज करने लग जाते हैं और लोगों का नुकसान करते रहते हैं.

बरख़िलाफ़ इसके वह साधु महात्मा जो मन्ज़िल और मुक़ाम और राह के ठौर ठिकाने से ख़ूब वाकिफ़ होते हैं वह ऐसे होते हैं जैसे जानने वाले वैद्य और हक़ीम जिनको कि anatomy (यानी बदन के अन्दर के अंग-प्रत्यंग) का इल्म है और बीमारी की सब किस्में जानते हैं और उनको यह मालूम है कि किन वजहों से बीमारियां पैदा होती हैं और फिर उनकी अलामात निशानियां (symptoms) और तशखीसें, रोग की पहिचान (diagnosis)और उनके अलहदा इलाज ख़ूब मालूम हैं, इनके अलावा पुराने मशहूर हकीमों के तजुरबे और हाल की तहकीकात और हाल की मालूमात की ताज़ा -तरीन (latest)खबर रहती है.

दूसरे तौर पर इस तरह समझना चाहिए कि जो सूफी या साधू इल्म लतायफ़ के पूरे वाक़िफ़कार हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे जंगलों में रास्ता बताने वाले जो हमेशा वहीँ रहते हैं और जंगल की सब ऊंची -नींची राहों से वाक़िफ़ हों और आबादी और खतरे की जगहें भी ख़ूब जानते हैं.

बरख़िलाफ़ इसके इस इल्म से नावाकिफ़ सूफी ऐसे हैं कि जिस तरह चन्द आदमी रास्ते से जंगल में भटक गए हों और रास्ते से अलग होकर बेरास्ते होकर भटकने लगे हों. उनमें से कुछ तो सर टकरा-टकरा कर मर गए क्योंकि उनका न कहीं इरादा था और न कोई राह जानी हुई थी और बाज़ लोग किसी न किसी तरह जंगल से निकल आएं.

जब मुद्दत के बाद अपने घर वापस आये तो हर शख्स ने अपना हाल अलग-अलग बयान किया और पूरी बात किसी ने भी नहीं कही. बल्कि एक की बात दूसरे की बात से बिलकुल खिलाफ़ थी. अब इन सब में से कोई भी ऐसा नहीं है जो एक दूसरे की बरख़िलाफ़ी को दूर कर सके और असल तत्व को बतला सके और जो जो बरख़िलाफियाँ हैं उनकी ज्यों की त्यों अपने-अपने मौके और जगहों पर रख कर द्वेष-भाव को दूर कर दें. सुनने वाले हैरत में रह जाते हैं कि कोई बात उनकी समझ में नहीं आती और वहम और दुविधा के शिकार हो जाते हैं.

इसलिए जो लोग 'अहलेतमकीन ' हैं यानी जिनको साक्षात्कार होने की स्थिति प्राप्त हो गयी है, वे लोग हैं जो अवतारों के वारिस और क़ायम मुकीम (स्थितप्रज्ञ) कहलाने के क़ाबिल हैं. अगर कोई आदमी इन बुज़ुर्गों की राह पर चलना चाहे तो दरअसल उनकी राह बिना इल्म लतायफ़ यानी कमलों (चक्रों) का ज्ञाम हासिल किये नहीं मिल सकती.

सीधा रास्ता वह है जिसमें न कोई तक़लीफ़ है और न भटकाव, और जो बिना चक्रों और कमलों के ज्ञान के नामुमकिन और बेफ़ायदा भी है. ग़रज़ कि इल्म-लतायफ़ यानी राह और मंज़िलों का ज्ञान परमात्मा की बड़ी देन है, जैसा कि ऊपर बयान किया गया है, जो ईश्वर ने आखिर ज़माने के बुज़ुर्गों को दी है.

अहले सलूक या पन्थाई दो किस्म के होते हैं. इस हिसाब से जो रास्ता 'ज़िक्र' यानी जाप, शब्द - अभ्यास भजन का इस वक्त रायज़ (प्रचलित) है वह दो तरह पर है और 'फ़िक्र' यानी मनन, चिन्तन, स्मरण, मराकबा भी दो तरह का होता है .

पहली किस्म तो यह है कि एक शख्स को परमार्थ हासिल करने का शौक पैदा हुआ. उसने जिस तरह बन सका, एक रास्ता पकड़ कर चलना शुरू किया. आखिर में किसी वक्त उसको शांति मिली और ऐसे असर उससे ज़ाहिर हो गए या होने लगे कि दूसरो को सिखलाने की क़ाबिलियत उसमें मालूम होने लगी और दूसरों को बतलाने लगा.

अब जिस जगह या मुक़ाम पर उसको पहुंचकर शांति नसीब हुई थी, उसी जगह और मुक़ाम तक का इशारा उसने अपने मुरीदों (शिष्यों) को दे दिया और इसका मतलब यह है कि इसके आगे की ख़बर उसको नहीं होती और सिवा इस कमाल के जो उसको हासिल हो चुका है, कोई दूसरा कमाल उसमें नहीं है .

बस उसके मुरीदों ने उसकी बतलाई हुई बात को याद कर लिया और उस पर अपना पूरा भरोसा करके आगे की तलाश से हाथ उठाकर इत्मीनान करके बैठे रहे और उन्होंने यह समझ लिया कि बस अब आखिरी कमाल और दर्ज़ा यही है - इसके सिवा अब कुछ और हासिल करने को बाक़ी नहीं रहा.

अक्सर इस किस्म के साधू सूफ़ी सिर्फ एक ही कमाल और निस्वत को रखते हैं. मिसाल के तौर पर यह समझ लो कि किसी ने महज़ क़ल्ब के लतीफ़े पर उबूर हासिल कर लिया या लतीफ़ेरूह या सिर या ख़फ़ी या अख़फ़ा या नफ़्स नातका वग़ैरा में किसी एक या दो पर काबू पा लिया. हिन्दू साहबान (भाई-बंधु) इस तरह समझ लें कि एक साधु ने हृदय चक्र को बेध लिया या भृकुटि स्थान और आज्ञा-चक्र को पार कर गया या ज़्यादा -से-ज़्यादा त्रिकुटी के मुक़ाम को तय कर लिया, तो यह काफी नहीं है क्योकि आगे अभी बहुत मुक़ाम तय करने को बाकी हैं.

ऐसी सूरत में किसी अभ्यासी को महज़ शौक़ और बेकरारी -तलाश और तड़प की कैफ़ियत हासिल होकर रह गयी और उसके आगे न बढ़ा. बाज़ों को जो रूहों से मुलाक़ात या फ़रिश्तों और देवताओं की मिसाली शक्ल या विराट देश से सम्बंधित होकर रह गया और आगे न चले या शब्द अभ्यास की मायावी सूरतों पर अभ्यास हो गया, असल शब्द तक रसाई (पहुँच) न हो पायी.

इस सूरत में साधुओं और सूफियों का तमाम लतीफ़ों यानि चक्रों में से एक या दो लतीफ़ा यानि चक्र मुहज़्ज़िब (प्रज्वलित) हो जाता है, बाक़ी सब उसी तरह अन्धकार और मंद गति में रह जाते हैं. यह कमाल नहीं है. अगर तुम्हारे सब लतीफ़ों का कमाल किसी तरह तुम्हारे सामने शक्ल बन कर आ जावे तो तुम अगर देख सकोगे तो यह देखोगे कि तुम्हारा आधा चेहरा स्याह है और आधा सफ़ेद या धब्बेदार.

हमारे बुज़ुर्गों में से ज़्यादा तादाद में ऐसे बुज़ुर्ग गुज़रे हैं कि जो शख्स सामने आता था उसका हाल और अन्दर सूक्ष्म शरीर का हाल फ़ौरन दरयाफ्त करके बता देते थे कि फ़लां शख्स का फ़लां लतीफ़ा ज़ाकिर (चक्र जाग्रत) है और फ़लां शख्स का दूसरा और उसके मुकाम और सूक्ष्म शरीर की सूरत देख लेते थे. हमारे मुर्शिदना (गुरुदेव) ने एक मरतबा, जब वह एक मकान में तशरीफ़ ले गए , तो यह बतला दिया कि इस ख़ास मुक़ाम और जगह में फ़लां साहब बैठ कर ज़िक्र शग़ल किया करते हैं और उस मुक़ाम पर फ़लां. अब ख़्याल फरमाएं कि आपका इल्म लतायफ़ किस दरजे बारीक और लतीफ़ (सूक्ष्म) है.

ऐसे सूफ़ी और साधू जिनका एक आध लतीफ़ा ज़ाकिर (वक्र) हो गया या कोई मुक़ाम जाग्रत हो गया और एक निस्बत हासिल हो गयी, अपने आपको कामिल समझ कर यह डींग मारा करते हैं कि शरीयत (धर्मशास्त्र) मौलवियों के लिए है और खुश्क ज़ाहिदों के वास्ते है, हम जिस मुक़ाम पर पहुंचे हैं वहाँ शरीयत का कुछ दख़ल नहीं है. अफ़सोस है कि बिना कुछ लतीफ़ों और मुक़ामों के तय किये हुए शरीयत अधूरी और नाक़िस बेकार रहती है.

असल और हक़ीक़ी शरीयत पर तब पहुँचता है जबकि कुल मुक़ामात तय हो जाएँ. बिना शरीयत यानी धर्मशास्त्र के फ़क़ीर और साधू नाक़िस हैं. बड़े-बड़े मस्त फ़क़ीरों और साधू महात्माओं ने अब तक इस मुअम्मे (भेद) को नहीं समझा है कि शरीयत क्या चीज़ है. इसलिए जिनका यह लोक नहीं संभला उनका परलोक क्या संभलेगा ?

जो शौक़ीन लोग अभ्यास करते हैं उनकी पहली किस्म की क़ैफ़ियत बयान में आ चुकी है. अब दूसरी तरह चलने वालों की बताई जाती है. दूसरी तरह ज़िक्र और फ़िक्र यानी भजन और स्मरण के अभ्यास को इस तरह हासिल किया करते हैं कि क़ामिल और पूर्ण संत सद्गुरु के बताये हुए अभ्यास को उनके सत्संग में जाकर करते हैं. यह संत सद्गुरु वे होते हैं जिनकी तारीफ़ संत मत की किताबों में लिखी है और जिनको उन दयालु और मालिकेकुल ने अपनी दया की मौज़ से दयाल देश से सीधा इस जंगल के जीवों का उद्धार करने और इस भव-सागर से पार उतारने की ग़रज़ से समय-समय पर भेजा है.

पहले गुज़रे हुए महात्माओं से जो-जो बातें और मुक़ामात तय न हुए और बाक़ी रह गए वह अब इन आख़िरी ज़माने के बुज़ुर्गों पर उतारे गए, ताकि कोई कसर तालीम में बाक़ी न रह जाये और मालिकेकुल का जो इरादा था वह इनको भेज कर पूरा किया गया. जो बातें कि पूर्णगति और मुक़म्मिल बनाने के लिए . दरकार थीं वह इन बुज़ुर्गों के हृदय में बराह-रास्ता उतारी गयीं. पन्थाइयों और राह चलने वालों को बराबर सिलसिले और तरतीब के साथ मंज़िलों को तय कराते

आये और हज़ारों-हज़ारों तालिबों और जिज्ञासुओं को इन महात्माओं ने क़ायदों की पाबन्दी ,जैसी कि होनी चाहिए थी, कराई और खुद की है . हर दर्द की दवा और हर आफ़त का इलाज इनको मालूम रहता है.

इस तरह पर ऐसे मुक़्क़मिल उस्तादों से सीखे हुए लोग असल मुक़ाम और पद को हासिल करते हैं . किसी दरमियानी मंज़िल और रास्ते पर इन लोगों का अटकाब नहीं होता और न रास्ते की किसी मंज़िल में अटक कर अधूरे रह जाते हैं, लेकिन अगर इनको लातायफ़ और मंज़िलों का तफ़सीलवार (ब्योरेवार) ज्ञान नहीं हो पाता तो यह ज़रूर है कि इनको चंद तरह के नुक़सान पहुँचने का डर होता है.

राम सन्देश : नवंबर-दिसंबर : २००३